ब्रह्म जिनदास

जीवन-परिचय : ब्रह्म जिनदास संस्कृत के महान विद्वान और कवि थे। ये भट्टारक सकलकीर्ति के कनिष्क भ्राता और शिष्य थे। भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज होने के कारण इनकी प्रतिष्ठा अत्यधिक थी। इनकी माता का नाम शोभा और पिता का नाम कर्णसिंह था। ये पाटन के रहने वाले तथा हूवड जाति के थे।

ब्रह्म जिनदास के सम्बन्ध में डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल ने एक स्वतन्त्र शोधपूर्ण ग्रन्थ भी लिखा है जो राजस्थान जैन साहित्य अकादमी जयपुर से प्रकाशित हुआ है।

रचना-परिचय : ब्रह्म जिनदास ग्रन्थ रचयिता होने के साथ कुशल उपाध्याय भी थे। यही कारण है कि इनके सान्निध्य में अनेक शिष्यों ने ज्ञानार्जन किया था।

ब्रह्म जिनदास का समय विक्रम संवत् 1450-1525 के बीच का है।

ब्रह्म जिनदास ने जीवन में बहुत अधिक लेखन कार्य किया है। पुराण, कथा, पूजा, रास, स्तवन और जयमाला आदि सभी विषयों पर संस्कृत एवं हिन्दी दोनों ही भाषाओं पर इन्होंने अपनी लेखनी चलाई है।

संस्कृत रचनाएँ : 1. जम्बूस्वामीचरित, 2. रामचरित, 3. हरिवंशपुराण, 4. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा 5. जम्बूद्वीपपूजा, 6. सार्द्धद्वयद्वीपपूजा, 7. सप्तऋषिपूजा, 8. ज्येष्ठजिनवरपूजा, 9. सोलहकारणपूजा, 10. गुरु पूजा, 11. अनन्तव्रतपूजा, 12. जल यात्रा विधि।

राजस्थानी रचनाएँ : 1. आदिनाथपुराण, 2. हरिवंशपुराण, 3. राम-सीतारास, 4. यशोधररास, 5. हनुमतरास, 6. नागकुमाररास, 7. परमहंसरास, 8. अजितनाथरास, 9. होलीरास, 10. धर्मपरीक्षारास, 11. ज्येष्ठिजिनवररास, 12. श्रेणिकरास, 13. समकितमिथ्यात्वरास, 14. सुदर्शनरास, 15. अम्बिकारास, 16. नागश्रीरास, 17. श्रीपालरास, 18. जम्बूस्वामीरास, 19. भद्रबाहुरास, 20. कर्मविपाकरास, 21. सुकौशलस्वामीरास, 22. रोहिणीरास, 23. सोलहकारणरास, 24. दशलक्षणरास, 25. अनन्तव्रतरास, 26. धन्नकुमाररास, 27. चारुदत्तप्रबन्धरास, 28. पुष्पाञ्जलिरास, 29. धनपालरास, 30. भविष्यदत्तरास, 31. जीवन्धररास, 32. नेमीश्वररास, 33.

करकण्डुरास, 34. सुभौमचक्रवर्तीरास, 35. अट्ठाबीस-मूलगुणरास, 36. मिथ्यादुक्डमविनती, 37. बारहव्रतगीत, 38. जीवड़ागीत, 39. जिणन्दगीत, 40. आदिनाथस्तवन, 41. आलोचनाजयमाल, 42. गुरुजयमाल, 43. शास्त्रपूजा, 44. सरस्वतीपूजा, 45. गुरुपूजा, 45. जम्बूद्वीपपूजा, 47. निर्दोषसप्तमीव्रतपूजा, 48. रविव्रतकथा, 49. चौरासीजातिजयमाल, 50. भट्टारकविद्याधरकथा, 51. व्रतकथा, 52. अष्टांगसम्यक्त्वकथा, 53. पञ्चपरमेष्ठीगुण वर्णन।